खेती अपनी संस्कृति

हम सबको मालुम, खेती कितने मुख्य है हमारा राष्ट्र में। खेती एक पुरानी काल काम है भारत में। खेती की कारण हमारा भारत में एक या एक व्यक्ति को काम मिल गया। इस खेती के कारण हम भारतिय भूगोल में प्रसिद्ध है। खेती अपनी संस्कृति की मुख्य आधार है।

हम सबको मालुम, खेती का प्रभाव पुराने तक आज की समय कैसे चल रहे है। पुराने काल में हमारे पूर्विक खेती को आश्रय करदिया और जिवित यह चल रहा दिया। हमरा राष्ट्र के किसानों को खेत उसको घर है। खेत की दान उसमें वस्त्रों की रुप है। किसानों की भोजन है खेती। इस में उन्हें खाना और पैसा मिल गया। खेती है एक वरुमान (सम्पति) को मार्ग है।

हमारा भारत की खेती का विशेषण अन्य राष्ट्र में एक बड़ा संभव विकास है। हमारा छोटा

भारत में ज्यादा विदेशियों आया। इसका कारण भारत की खेती है। अरब, चैना, इंगलन्ट में विविध व्यक्तियों आया। सबको लक्ष्य हमारा खेती है। सबको मालुम हमारा खेती चिंसों अच्छा है।

हम सबको मालुम वासको ड़ा गामा। उसने केरल में आया। इसके कारण केरल की खेती। केरल और भारत की खेती चिंसों की एक मुख्य चिंस है सुगन्धद्रव्यड़जन। इसकी उपयोग अच्छा है। इस वसतु को दुकान और मारक्कट में ज्यादा पैसा मिल गाया। इस वस्तुत उसको संजा था।

हमारा भारत की खेती इतना प्रमुख कैसे है मालुम? भारत में एक ही वस्तुता प्रधान है। हमारा राष्ट्र कि ज़मिन अच्छा है। इस ज़मिन पर ईश्वर की वरदान भरदिया। इस ईश्वर की वरदान तो मात्र नहीं, इस ज़मिन में एक या एक किसान की महनत ज्यादा है। वे कितने मेहनत करदिया, इस की तुल्य फल उसमें मिल दिया। एक था एक किसान में खेती उसकी ईश्वर है। उन्हें खेती ज्यादा प्यार करदिया।

खेती को प्राधान्य हम सबको मालुम। खेती में स्त्रि-पुरुष भेधभाव नहीं है। कितने काल हम राष्ट्र में खेती करदिया, अतने काल राष्ट्र में सम्रिति आये था। पुरानि काल में आरय गोत्र लोगों भारत की नदीतीर में खेती आरंभ करदिया। इसके बाद खेती एक कुल काम की रूप में आये था। हमारा भारत की एक था एक स्थान में खेती के अटिस्थान नाम लिया करदिया। उदाहरण है केरल। केरल केर वृक्ष की स्थान है। इसलिए केरल को इस रूप की नम मिल गया।

एक एक स्थान में खेती व्यत्यस्त है। विविध रीति में खेती चल रहा था। स्थान की अटिस्थान खेत, खेती, और चिंसों व्यत्यस्त है। केरल की खेती नहीं है तमिलनाटु में। केरल में चावल खेती करदिया। वे तमिलनाटु में बीटरूट खेती करदिया।

भारत की आधार है खेती। आज हमारा समुह में खेती पुरानि काल में ज्यादा व्यत्यस्त है। नया मेषीन और बिकसन इस मेखला में आया था। खेती भरवानि भारत कितना सुन्दर है।

खेती एक राष्ट्र की विकसन की एक भाग है। हम सबको देखो, हमारा राष्ट्र की खेती व्यवस्ता कैसे अन्य राष्ट्र से व्यत्यस्त है। हमारा भारत की खेती, खेत, किसानों, खेती के मार्ग, खेती चिंसों, भोजन वस्तुवों सबको कैसे व्यत्यस्त है। काल की अनुसार हम भारतिय और हमारा खेती की व्यवस्ता पुरोगित करदिया।

आज एक खुशी विशय क्या है मालुम? हमारा भारत की खेती के अनुसार लोकराष्ट्र खेती परिक्षण करदिया। कितनों के परिक्षण यत्नकरदिया तो हमारा भारत की व्यवस्त में कुछ नई यत्नदिया। भारत की भूप्रकृति भारत को स्वान्ध है। हमारा राष्ट्र विकसन की मूर्धन्य अवस्त में है। राष्ट्र में विविध तरह काम को पठने केलिए विद्यालय और अध्यपकों हैं। वे खेती में छोटे से श्रद्धा करदिया, इसें बड़ा करदिया।

हम सबको जनने वाले एक कार्य है। हमारा भारत की सिन्दूररेखा है खेती। खेती एक यं छोटा सा काम नहीं। इस एक महतपूर्ण काम है।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

इस में हम ज्यादा मालुम रहे हैं। इस एक अर्थ मुक्त जिवित शैली है। खेती करनेवाली व्यक्ति एक महतवाली है। ~~एक~~ हम एक था एक उसने बहुमान करदिया।

अब हम याद करनेवाली कार्य, खेती एक व्यक्ति की आधार नहीं, एक राष्ट्र का आधार है। और खेती एक काम नहीं है। इस एक राष्ट्र की संस्कृति। इस राष्ट्र की विकसन और पुरोगती है। हमारा भारत की खेती हमारा भारत की उठने-वाली सूर्य है। हम भारतिय जनता की संस्कृति है। हम सबको इसमें उठने करदिया। हम सबको हमारा "खेती" का नाम संस्कृति इस भूगोल में इसकी उचाई में यत्न करदिया। एक और बार में याद करदिया, "खेती अपनी संस्कृति है"।